RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 March 2018 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd March 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : ग्यारहवां | मार्च–2018

गुरु के विछोड़े का दर्द 5

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन–अभ्यास 17

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

माफी 23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मन की आदत बदलें 29

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

जुल्म साथ है खाली हाथ है 33

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
9950556671, 8079084601, 9871501999
विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
उप संपादक–नन्दनी, **सहयोग**–सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 192 Website : www.ajaibbani.org

शाह कृपाल प्यारेया

शाह कृपाल प्यारेया, अटक जरा इक पल जावीं,
असीं रोदें खड़े नसीबां नूं, साडी सुण दर्दां दी गल्ल जावीं,
ओ साईं सुण दर्दां दी गल्ल जावीं, (2)

1. सोहणा घट-घट विच समाया है, ना भेद किसे ने पाया है, (2)
तैनूं दिल अपणे विच पा लया, सानूं देंदा अपणा बल जावीं,
ओ साईं सुण .....

2. तैनूं देवी-देवते चौहंदे ने, चन्न-सूरज भी शरमोंदे ने, (2)
शाह सावन देया प्यारेया, सानूं विसर जरा ना पल जावीं,
ओ साईं सुण .....

3. सच्चे नाम दा शाह भंडारी हैं, तूं दाता असीं भिखारी हैं, (2)
दिल अर्जां कर-कर हारेया, विछोड़े वाला सल्ल ठावीं,
ओ साईं सुण .....

4. करे अर्ज ऐह जीव निमाणा ऐ, तेरा सच्चखंड टिकाणा ऐ, (2)
नूरी दर्शन देजा प्यारेया, हुण देर जरा ना पल लावीं,
ओ साईं सुण .....

5. ऐह दुनियां घुम्मण घेरी ऐ, असीं आस रखी इक तेरी ऐ, (2)
'अजायब' देआ सहारेया, अक्खियां तो पल ना टल जावीं,
ओ साईं सुण .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु के विछोड़े का दर्द

गुरु रामदास जी की बानी DVD-519 कैलिफोर्निया–अमेरिका

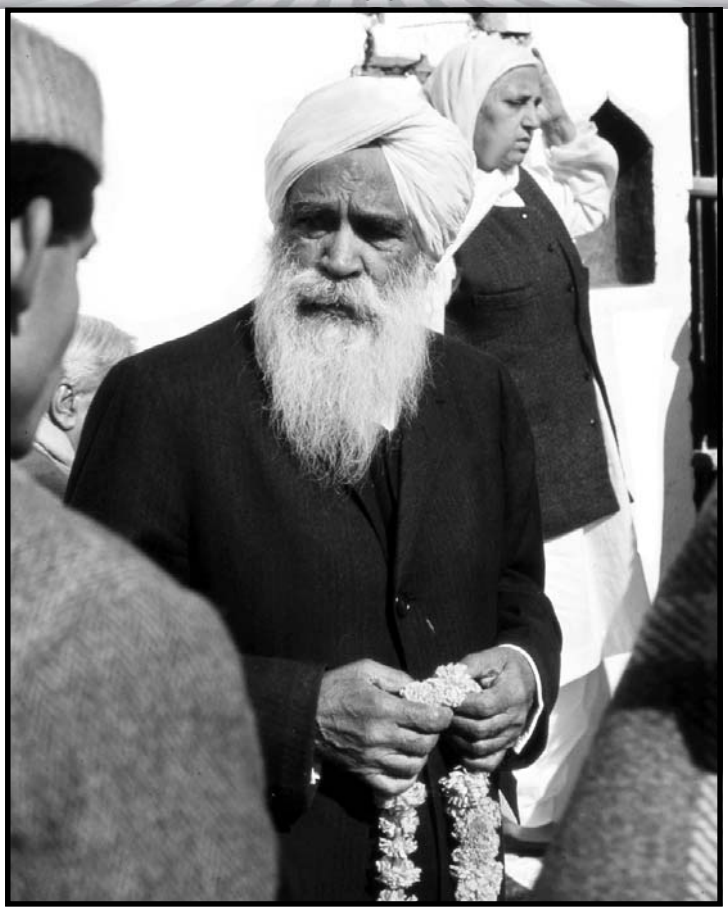

हाँ भई! परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं इंसान का बनना ही मुश्किल है।'' मैंने आत्मा की जुबान से इन भजनों में ज्यादा से ज्यादा यह बताने की कोशिश की है कि परमपिता कृपाल क्या थे, कहाँ से आए थे और वे हमें क्या देना चाहते थे? हमने मन-इंद्रियों के गुलाम बनकर उनकी कद्र

नहीं की। वह हमें जो देना चाहते थे, हम वह प्राप्त नहीं कर सके। अभी भी मौका है क्योंकि आप हमारी देह के अंदर हैं। आप नाम देकर हमें भूले नहीं, आज भी हमारी इंतजार में हैं।

माता बच्चे को पालती है। जब जीव माता के पेट के अंदर प्रवेश करता है तो उस वक्त से ही माता को फिक्र हो जाता है, वह ऊँची-नीची जगह पैर नहीं रखती। ऐसा खाना नहीं खाती कि पेट के अंदर बच्चे को कोई तकलीफ हो जाए। जब बच्चा परमात्मा के हुक्म से बाहर आता है तो वह बच्चे को सूखी जगह सुलाती है और खुद गीली जगह पर सो जाती है। जब बच्चा सोया है माता अपने कारोबार में लगी है लेकिन जब बच्चा माता के प्यार को अपनी जरूरत बताने के लिए रोता है तो माता बेशक कितना भी जरूरी काम क्यों न करती हो वह ममता की बँधी भागकर बच्चे को छाती से लगाती है, उसकी हर जरूरत पूरी करती है।

हम उस परमात्मा के बच्चे हैं वह हमें भूल नहीं गया, हम उसके दिल पर लिखे हुए हैं। सवाल हमारा है कि हम दुनिया की रंग-रलियों में सोए हुए हैं, जाग रहे हैं या हमें कोई जरूरत भी है? जब हमारी आत्मा के अंदर उसके मिलाप की तड़प उठती है तो हम दुनिया के सब सहारे छोड़कर उसे पुकारते हैं तब उस दयालु कुलमालिक से रहा नहीं जाता, वह इंसानो में इंसान बनकर आता है। वह हमारे प्यार का बँधा हुआ बिमारियों का खोल धारण करके परेशानियों की दुनिया में आता है। पल्टू साहब कहते हैंः

उन्हें क्या है चाह फिरत हैं मुल्क बथेरा।
जीव तारण कारणे सेहंदे दुख घनेरा।।

मैं हमेशा ही अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैं शारीरिक तौर पर दयालु कृपाल को नहीं जानता था। मैंने फरियाद की, ''तू

मुझे मिल, मैं तेरे प्यार का भूखा हूँ। तुझसे मिले बिना इस आत्मा की प्यास नहीं बुझती।'' जब सब रिश्ते-नातों का सहारा छोड़कर उसकी याद में बैठा तो उस दयालु से रहा नहीं गया। वह बिना बुलाए ही इस गरीब आत्मा पर दया करने के लिए आ गया।

पाठी जी ने अभी भजन बोला है जिसमें यही बताया है कि मैं सुंदर नहीं, मेरे पास कोई ऐसा गुण भी नहीं जिससे पति खुश हो जाए। तू मेरा पति है, तू मेरा कंत है और मैं तेरी औरत हूँ। मैंने एक भजन में बताया है अगर मुर्शिद को अपने ऊपर खुश करना है तो सबसे पहले तड़प बनानी पड़ती है। इस तरह की तड़प बनानी पड़ती है जिस तरह बच्चा माँ के प्यार में रोता है उस समय बच्चे के आगे चाहे मिठाई रखें, चाहे खिलौने रखें, चाहे जो भी वस्तु रखें लेकिन जब तक माँ बच्चे को अपनी छाती का दूध नहीं पिला देती बच्चा खुश नहीं होता।

इसी तरह जिन आत्माओं के अंदर सतगुरु का प्यार जाग पड़ता है उन्हें विषय-विकार जहर की तरह लगते हैं, उन्हें अंदर से ही ग्लानि हो जाती है। उनका प्यार गुरु के साथ लग जाता है। गुरु मिलता है तो वे गुरु के दर्शन करके खुश होते हैं।

परमात्मा सच्चा-सुच्चा और पवित्र है उसमें दुनिया की मिलावट नहीं। गुरु भी परमात्मा की जीती-जागती एक तस्वीर है, एक शरीर है जिसमें वह काम करता है वह भी प्योर और पवित्र है। हम लोग बातों से परमात्मा को पाना चाहते हैं लेकिन जब तक हम भी उतने प्योर और पवित्र नहीं होते परमात्मा को नहीं पा सकते। कबीर साहब कहते हैं:

घायल ऊपर घाव ले टोटे त्यागी सोय।
भर जोबन में शीलवन्त विरला होए तो होए।।

क्या कोई ऐसा है जिसे पहले ही बहुत गहरा घाव हुआ हो और वह उसके ऊपर और भी घाव लगवाने के लिए तैयार हो जाए अगर कोई ऐसा त्यागी है तो वह सूरमा है। भरी जवानी में कोई विरला ही शील धारण करता है। जब हम दुनिया से मौहब्बत कम करते है गुरु से मौहब्बत बढ़ाते हैं, अपने ख्याल को विषय-विकारों से ऊपर उठाते हैं तब गुरु का प्यार हमारे अंदर घर कर जाता है। सीधी सी बात है कि तराजु के जिस पलड़े में ज्यादा वस्तु होगी वही पलड़ा भारी होता है वह अपने आप ही उस तरफ झुक जाता है।

जब परमात्मा ऐसी आत्मा को संसार में भेजता है तो उसके ऊपर गरीबी-अमीरी का कोई असर नहीं होता। जब तक उन्हें परमात्मा से जोड़ने वाली आत्मा नहीं मिल जाती उन्हें चैन नहीं आता। उन्हें सच्चे दिल से खोज होती है। सभी सन्तों ने हमें डेमोनस्ट्रेशन देने के लिए ज्यादा से ज्यादा अभ्यास किया। परमपिता कृपाल ने अपने गुरु की याद में भजन लिखते हुए यही बतायाः

मैथों चंगियां जुतियां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियां।

मुझसे अच्छी तो तेरी जूतियां हैं, तू सच्चा- सुच्चा है। अजायब ने भी अपने भजन में यही कहा हैः

किसी काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''जब हमारे दिल के अंदर उस परमात्मा से मिलने की तड़प उठी, प्यार पैदा हुआ तो हमने उसे जंगलों-पहाड़ों, मंदिरों-मस्जिदों और हर समाज के अंदर ढूँढ़ा लेकिन वह कहीं नहीं मिला।'' जब गुरु अमरदेव जी की शरण में आए तो उन्होंने बताया, ''तू जिसकी तलाश में है वह तुझे

बाहर नहीं मिलेगा, वह नजदीक से नजदीक तेरे शरीर के अंदर है।'' अमरदेव जी महाराज का वचन हमारे दिल में तीर की तरह लगा। कितने अफसोस की बात है वह हमारे अंदर होते हुए हमें नहीं मिला। जब अंदर तवज्जो दी वह हाजिर-नाजिर था उससे मिलकर आत्मा गद-गद हो गई।

आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। इसमें गुरु रामदास ने गुरु प्यार को ज्यादा से ज्यादा लिया है। आप गुरु के ऊपर आशिक थे, गुरु के सच्चे प्यारे थे।

अंतर प्यास उठी प्रभ केरी सुण गुरबचन मन तीर लगई आ।।
मन की बिरथा मन ही जाणै अवर कि जाणै को पीर परई आ।।

गुरु रामदास जी कहते है, ''शब्द का तीर, गुरु के वाक का तीर अंदर ही अंदर घाव कर जाता है। यह घाव बाहर किसी को दिखाने वाला नहीं होता। इस जख्म को कोई महरम ही देख सकता है वही इसकी मलहम जानता है, **गुरु के विछोड़े का दर्द** वही आत्मा जानती है जिसके अंदर इस विछोड़े का तीर घाव कर जाता है।''

कबीर साहब कहते हैं, ''घायल जिंदा नहीं क्योंकि उसे सुरत-शब्द का तीर लग चुका है। यह पढ़ने-लिखने का काम नहीं इसे पढ़-पढ़ाई से नहीं पाया जा सकता। सिर्फ गुरु के मिलाप और गुरु की दया की जरूरत है।'' विछोड़े की कद्र उसे ही पता है जो अपने यार से विछड़ा हुआ है। बीमारी का बीमार को ही पता है तंदरूस्त को पता नहीं कि बीमारी का कितना दर्द होता है।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''मैं जानता हूँ या वह जानता है जिसने यह तीर लगाया है। इस दर्द का किसी को क्या ज्ञान है कि रामदास के अंदर कितना दर्द है?''

राम गुर मोहन मोह मन लईआ।। राम गुर मोहन मोह मन लईआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जब प्यार का बाण लगा गुरु ने अंदर तवज्जो दी तो आत्मा गुरु के प्यार में बंध गई। जब उसे अंदर देखा तो मन मोहित हो गया। अब जहाँ भी आँख उठाते हैं कोई पराया नजर नहीं आता हर जगह गुरु ही समाया हुआ नजर आता है। पत्ते-पत्ते के अंदर प्यारा गुरु ही दिखता है।''

हौं आकल बिकल भई गुर देखे हौं लोट पोट होय पईआ।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एम.ए. पास को पाँच साल के बच्चे जैसा बनना पड़ता है, अपनी अक्ल छोड़कर गुरु की अक्ल पर मान करना पड़ता है।'' गुरु रामदास जी भी यही कहते हैं, **''मैं थी तो आत्मा अक्लवाली लेकिन जब गुरु को अंदर देखा तो मैं उसके इश्क में पागल हो गई। अक्लवाली से बेअक्ल हो गई क्योंकि उसने मेरा मन मोह लिया, अपनी तरफ खींच लिया।''**

मैं बताया करता हूँ कि मेरा एक दोस्त मौलवी था, वह मेरे गाँव के नजदीक ही रहता था। वह आमतौर पर मुझसे कहता कि इंसान कैसे भगवान हो सकता है? इंसान को भगवान मानना ज्यादा से ज्यादा गलती है। वह कई बार कहता जब आपका गुरु यहाँ आए तो मुझे पता होना चाहिए। एक बार उसे पता लग गया। वह आया और उसने परमपिता कृपाल के साथ बहुत सी बातें की। वह अच्छा पढ़ा-लिखा मौलवी था।

परमपिता कृपाल को ज्यादा से ज्यादा दुनियावी इल्म था लेकिन सन्त सब कुछ जानते हुए भी अंजान बन जाते हैं। वह महाराज कृपाल के साथ बहुत बातें करता रहा लेकिन परमपिता कृपाल थोड़ा सा बोले। परमात्मा कृपाल ने कहा, ''देख भई! मैं तुझे

किताबों का क्या हवाला दूँ? मैं तेरी जिंदगी का ही हवाला दे देता हूँ कि तू जिस घोड़े पर बैठकर आया है, थोड़े दिनों में तूनें इसी के हाथों मर जाना है।'' मौलवी के दिल में था कि ये मुझे यहाँ से वापिस भेजने के लिए ऐसी बात कह रहे हैं।

तीन-चार दिनों बाद मौलवी जब अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए गया तो घोड़ा किसी चीज़ से डर गया। घोड़े ने अपने पिछले दोनों पैर जोड़कर मौलवी की छाती में मारे, मौलवी गिर गया और खत्म हो गया। आठ-दस दिन बाद उसका लड़का मुझसे मिला, उसने बताया कि आपका दोस्त अपने घोड़े से ही चल बसा है।

कहने का भाव हम सन्तों को इंसान समझते हैं। यह कोई करामात नहीं सिर्फ उस जीव को मामूली सा ही बताया था कि भई! तू इतनी बड़ी-बड़ी बातें करता है। कबीर साहब कहते हैं, ''आज तक कोई कागज की बेड़ी पर चढ़कर पार नहीं हुआ। ग्रन्थ-पोथियाँ हमें वाकफियत देती हैं अगर हम इन्हें पढ़कर यह कहें कि हम परमात्मा से मिल जाएंगे या हम काम, क्रोध पर काबू पा लेंगे तो ऐसा नहीं हो सकता।''

हौं निरखत फिरौं सभ देस दिसांतर मैं प्रभ देखन को बहुत मन चईआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''मैंने परमात्मा को ऊँची-नीची बहुत जगह ढूँढ़ा। मैं हर समाज के अंदर गया मेरे दिल के अंदर बहुत चाव था कि क्या मैं परमात्मा को देख सकता हूँ? वह परमात्मा कैसा है जिसने अजीब ही किस्म की रचना रची है फिर गुप्त रूप होकर पत्ते, पशु, पक्षी, इंसान सबके अंदर समाया हुआ है।''

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि मैं काफी समाजों में गया। हिन्दुस्तान में जहाँ कोई जप-तप कर रहा था जिसने मुझे जो

कुछ बताया उसे मैंने प्यार, श्रद्धा और लगन के साथ किया लेकिन दिल को शान्ति नहीं आई तसल्ली नहीं हुई। जब आत्मा का परमात्मा कृपाल मिला तो तसल्ली हो गई फिर पता लगा कि देश-देशांतरों के अंदर परमात्मा नहीं था वह परमात्मा हमारे अपने अंदर था।

मन तन काट देओं गुरु आगै जिन हर प्रभ मारग पंथ दिखईआ।।

अब आप कहते है, ''मैं अपना मन, तन काटकर गुरु के आगे फेंक दूँ जिसने मेरा समाज नहीं छुड़वाया, मुझसे कोई पैसा-पाई नहीं ली। गुरु ने मुझे वह रास्ता बताया जिससे मैं परमात्मा से मिल सका और उसे अपना बना सका।'' कबीर साहब कहते हैंः

आवत साध ना हरख्या, जात ना दिया रोए।
कहे कबीर तें दास का काम कहाँ से होए।।

मैं बताया करता हूँ कि जब परमपिता कृपाल मुझसे अलग होते तो मैंने एक दिन यह बोलाः

नाल परदेसी न्यों न लाईऐ, चाहे लख टके दा होवे।

आगे से हुजूर ने हँसकर यह कहाः

ईक गल्लों परदेसी चंगा, जद याद करे तद रोवे।

मेरा प्यार सच्चा था तो मेरे गुरुदेव का भी मेरे साथ सच्चा प्यार था। मेरा उनके साथ इस तरह का प्यार था कि मैं जितना समय गुरुदेव को दिखता रहता था आप बाहर खड़े रहते थे अंदर नहीं जाते थे वे मुझे दूर तक देखते रहते थे। मुझे कहीं भी इतना प्यार नहीं मिला हालाँकि मेरी माता ने मुझसे ज्यादा से ज्यादा प्यार किया लेकिन मेरे गुरुदेव ने मुझसे वह प्यार किया जिसकी मिसाल मैं दुनिया में नहीं दे सकता।

कोई आण संदेसा देय प्रभ केरा रिद अंतर मन तन मीठ लगईआ।।

अब आप कहते हैं, ''उसके साथ कितना प्यार, कितना इश्क़ है अगर कोई मेरे पास आकर उसकी बात करता है तो वह मुझे तन-मन से भी ज्यादा प्यारा लगता है। मेरा मन करता है कि मैं उस बंदे पर सब कुछ वार दूँ क्योंकि वह मेरे प्यारे गुरु की मीठी-मीठी बातें करता है, मेरे दिल के अंदर उसकी याद ताज़ा करता है।''

मस्तक काट देओं चरणां तल जो हर प्रभ मेले मेल मिलईआ।।

आप कहते हैं, ''मैं किसी बिछौने की बजाय अपना सिर काटकर गुरु के नीचे रखने के लिए तैयार हूँ क्योंकि गुरु ने मुझे प्रभु से मिला दिया और प्रभु के साथ प्यार करवा दिया।''

चल चल सखी हम प्रभ परबोधह् गुण कामण कर हर प्रभ लहीआ।।

अब गुरु रामदास जी हमें संदेश देते हैं और अपने गुरु भाईयों, सतसंगियों से कहते हैं, ''चलो! हम सब मिलकर उसकी याद मनाए, अपने अंदर उस औरत वाले गुण धारण करें जो अपने पति को अपने ऊपर रिझा लेती है।''

भगत वछल उआ को नाम कहीअत है सरण प्रभु तिस पाछै पईआ।।

जिस तरह माता को बच्चे प्यारे हैं उसी तरह परमात्मा को भक्त प्यारे हैं। परमात्मा भक्तों की लाज रखता आया है। आओ! हम सब मिलकर उसकी शरण पड़े, उसके आगे विनती करें।

खिमा सींगार करें प्रभ खुसीआं मन दीपक गुर ग्यान बलईआ।।

आप कहते हैं, ''पति को खुश करने के लिए औरत श्रृंगार लगाती है। इस तरह आत्मा का श्रृंगार क्या है? परमात्मा पति है और आत्मा उसकी स्त्री है। हमने क्या श्रृंगार करना है? हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार छोड़कर; क्षमा, धीरज,

विवेक और संतोष का श्रृंगार करना है। मन की और शब्द की ज्योत जगानी है। यह श्रृंगार करके प्रभु के पास जाना है, प्रभु इस श्रृंगार से खुश होता है।''

रस रस भोग करे प्रभ मेरा हम तिस आगै जीउ कट कट पई आ।।

दुनिया के अंदर माता-पिता, बहन-भाई के रिश्ते तो हैं लेकिन सन्तों ने स्त्री और मर्द का रिश्ता लिया है क्योंकि यह जिंदगी में आखिरी वक्त तक साथ रहता है। हमारी परंपरा थी कि औरत-मर्द मरकर ही अलग होते थे लेकिन अब हम उससे दूर हो रहे हैं। रामायण के अंदर आता है अगर कोई औरत-मर्द डरकर भी पतिव्रता धर्म का पालन कर जाते हैं तो उनकी पहुँच स्वर्गों तक हो जाती है।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि जब मियाँ-बीवी इकट्ठे होते हैं, भोग-भोगते हैं बिमारियाँ लगा लेते हैं। वहाँ आत्मा और परमात्मा के दरम्यान किस चीज़ का भोग है? कतरे का समुद्र में मिल जाना आत्मा के परमात्मा में मिल जाने से परमात्मा खुश होता है।

हर हर हार कंठ है बनया मन मोतीचूर वड गहन गहनई आ।।

आप कहते हैं, ''जो मन दीवार बनकर हमारे और गुरु के प्यार के बीच खड़ा था, हमें विषय-विकारों की तरफ ले जा रहा था अब वह गुरु के प्यार में इस तरह पिरोया गया है जिस तरह अनाम मोती हार में पिरोया जाता है।''

हर हर सरधा सेज बिछाई प्रभ छोड न सकै बहुत मन भई आ।।

जिस तरह औरत, मर्द के मिलाप के लिए सेज की, साफ कमरे की जरूरत पड़ती है उसी तरह परमात्मा से मिलाप के लिए श्रद्धा, प्यार और धीरज के सेज की जरूरत है।

कहै प्रभ अवर अवर किछ कीजै सभ बाद सींगार फोकट फोकटई आ।।

आप कहते हैं, ''गुरु परमात्मा कुछ कहे लेकिन सेवक कुछ और करे तो सेवक का कर्म-काण्ड, शुभ कर्म किसी भी लेखे में नहीं।''

कीओ सींगार मिलण कै ताईं प्रभ लीओ सुहागन थूक मुख पई आ।

गुरु रामदास जी ने बहुत अच्छी मिसालें देकर समझाया है अगर कोई औरत हार-श्रृंगार लगाकर पति से मिलने जाए लेकिन पति दरवाजा न खोले तो उस औरत का मुँह थूकने के काबिल है। इसी तरह अगर सारी जिंदगी जप-तप, पूजा-पाठ, कर्म-काण्ड करते हुए परमात्मा नहीं मिला तो हमारा मूल्य कौड़ी भी नहीं।

हम चेरी तू अगम गुसाईं क्या हम करें ह् तेरै वस पई आ।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जिन आत्माओं के अंदर सच्ची तड़प है, सच्चा प्यार है वे यही कहती हैं कि हम तेरे बस में हैं। तू हमें भूखा रख चाहे नंगा रख तेरी मर्जी है। तू हमें अपना प्यार जरूर बख्श, हम तेरे बस में हैं।''

दया दीन करो रख लेवो नानक हर गुर सरण समई आ।।

गुरु प्यार का सारा शब्द कहकर आखिर अपने गुरु के आगे फिर यही कहते हैं, ''मैं दीन होकर तेरी शरण में आया हूँ। तू मुझे गरीब जानकर अपने चरणों में जगह दे, तेरे चरणों के बगैर मेरा और कौन-सा ठिकाना है? तू मेरी लाज रख।''

हमारा भी फर्ज बनता है कि हम भी गुरु रामदास जी के कहने के मुताबिक अपने जीवन को ढ़ालें अपने अंदर तड़प, श्रद्धा और प्यार पैदा करें। जिन गुणों से परमात्मा गुरु खुश होता है हम भी अपने अंदर वही गुण धारण करें।

2 मई 1985

***

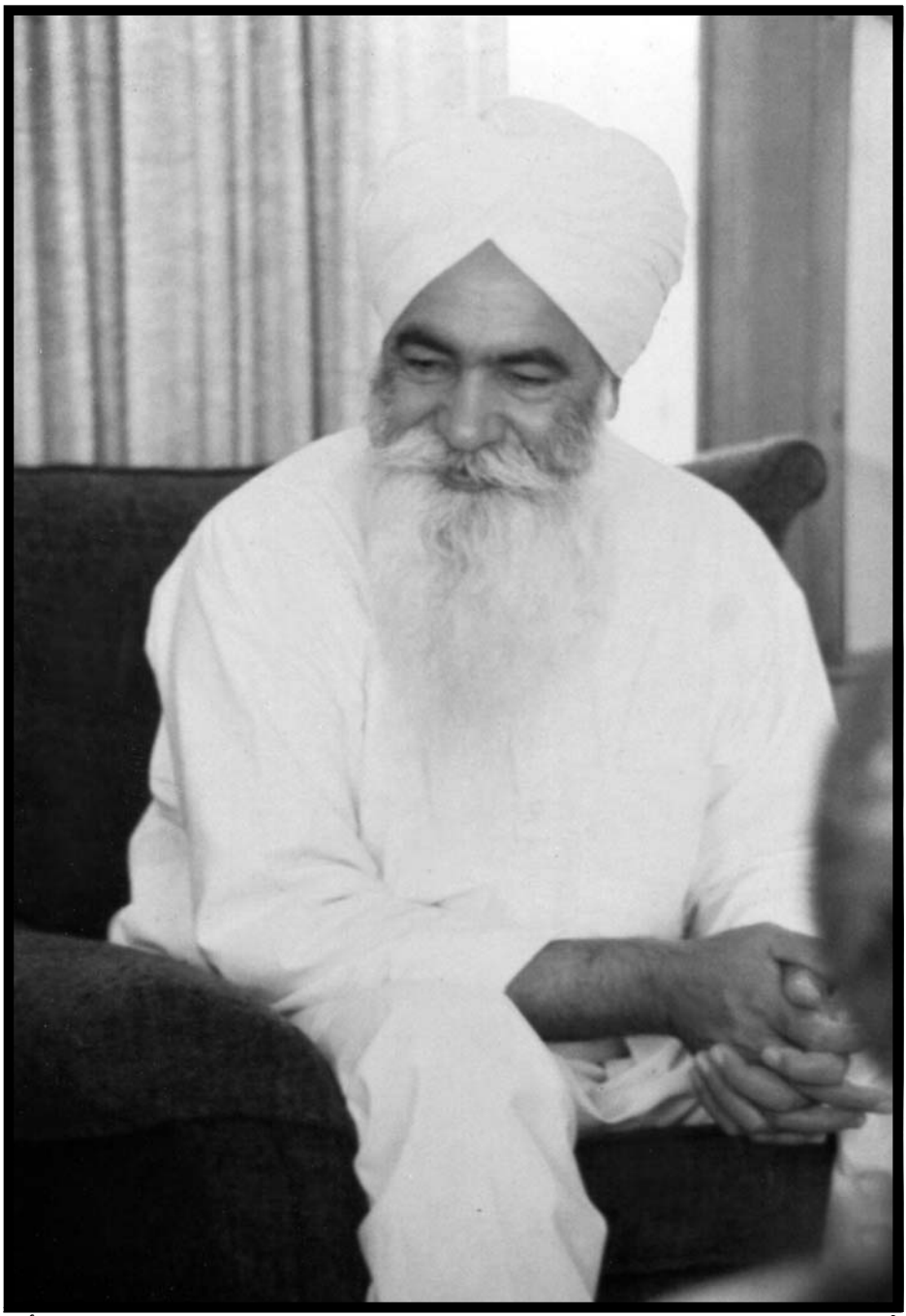

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

हाँ भई! रोज की तरह शान्त मन से अभ्यास करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज की तरफ तवज्जो न दें। हम जिस काम की खातिर यहाँ बैठे हैं उस तरफ तवज्जो दें। हमने मन को बाहर नहीं भटकने देना इसे तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। सतसंगी को सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं कि सिमरन के अंदर कितनी शक्ति है और सिमरन करना कितना जरूरी है।

मैंने कल सतसंग में बताया था कि दुनिया का सिमरन ही हमें इस दुनिया में लाता है। दुनियादारों के सारे काम कभी पूरे नहीं होते जो काम रह जाते हैं आखिरी वक्त उन कामों के सकंल्प दिल–दिमाग में उठते हैं तो जीव उन्हें पूरा करने की खातिर उसी आशा से बंधा हुआ फिर इस संसार में आता है। सन्तों ने हमारी इस कमजोरी से फायदा उठाते हुए हमें समझाया कि सिमरन को सिमरन और ध्यान को ध्यान काटता है।

कायदा यह है कि हम जिसे याद करते हैं जिसका दिया हुआ सिमरन करते हैं उसका स्वरूप अपने आप ही हमारे अंदर ठहरना शुरू हो जाता है। अगर हम दुनिया के कारोबार को याद करते हैं तो दुनिया की शक्लें अपने आप ही हमारे आगे ठहरनी शुरू हो जाती हैं। आखिर जहाँ हमारा ख्याल होता है अंत समय में वही ख्याल आते हैं वही याद आती है और हम उसी लय में बह जाते हैं आगे जाकर उसी शक्ल में जन्म लेना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव ज्यादा दूर जाकर जन्म नहीं लेता ज्यादा से ज्यादा वह पड़ोस में ही आ जाता है क्योंकि उसका उसी जगह प्यार है। पहले वह जिस घर में बुजुर्ग होता है उसी घर में बच्चा बनकर आ जाता है या कोई पशु वगैरहा बनकर उस घर में आ जाता है।''

महात्मा हमें बहुत प्यार से कहते हैं कि आप सिमरन पर जोर दें, हम सिमरन पर जोर नहीं देते शब्द सुनने पर जोर देते हैं। आमतौर पर शब्द हमें खींचता नहीं क्योंकि हमारी आत्मा बाहर दुनिया में फैली हुई है, शब्द के दायरे में नहीं आ रही। जिस तरह आप चाहे जितना भी लोहा रख दें जब तक लोहा चुम्बक के दायरे में नहीं आता चुम्बक उसे नहीं खींचता। शब्द हमारे माथे के पीछे धुनकारें दे रहा है। जब आत्मा शब्द के दायरे में आएगी तो शब्द इसे खींच लेगा, शब्द का दायरा सचखंड से ऊँचा है।

हमारा फर्ज बनता है कि हम आत्मा को सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर एकाग्र करें। यहाँ शब्द आ रहा है, शब्द इसे खींचकर ऊपर ले जाएगा। हमारा काम सिमरन करना है। आप अपनी सुरत को खींच नहीं सकते न ही यह आपका काम है। सुरत को खींचकर आगे ले जाना गुरु का काम है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

खींचे सुरत गुरु बलवान।

आपका काम है कि नौं द्वारे खाली करें छह चक्रों को खाली करके सिमरन के जरिए आँखों के पीछे आएं जहाँ शब्द आ रहा

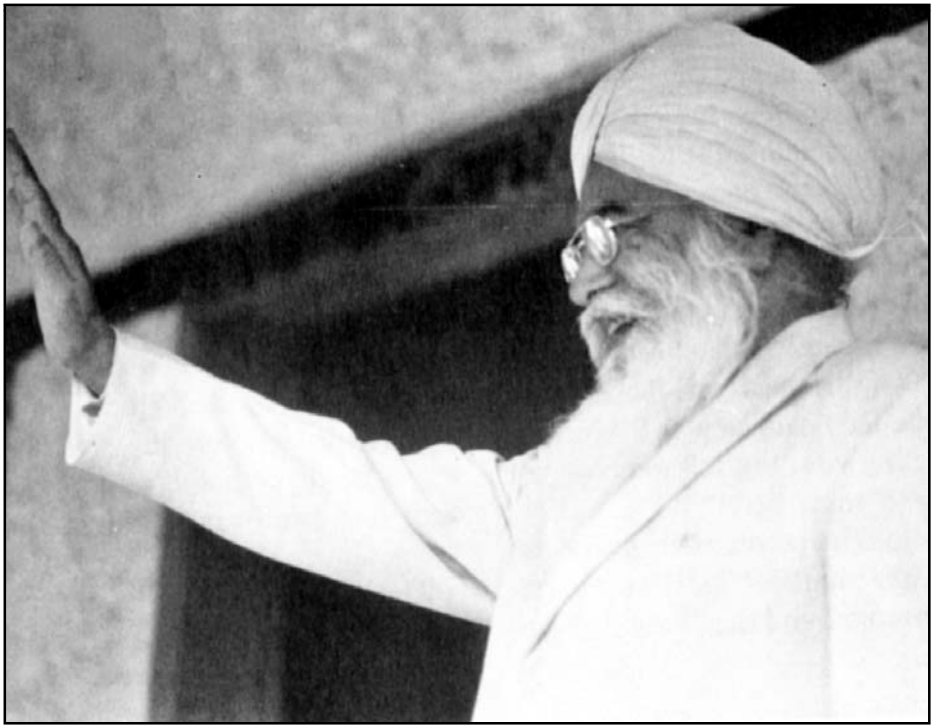

है। यहाँ तक पहुँचना शिष्य का काम है आगे गुरु की ड्यूटी है गुरु यहाँ आपको आपसे पहले ही मौजूद मिलेगा।

दो रास्ते हैं एक दाँया और दूसरा बाँया। बाँई तरफ काल बैठा है वह हमारी आत्मा की ताक में है कि यह कब आए और मैं इसे संभालूं। दाँई तरफ गुरु भी हमारी इंतजार में बैठा है कि मेरी आत्मा कब आए मैं इसे संभालूं। गुरु हमारे अंदर न हो तो हम यह फैसला नहीं कर सकते कि किस शब्द को पकड़ना है, हमारा कौन सा रास्ता है, हमने किस तरफ जाना है? अंदर बहुत झमेला है। बाहर की दुनिया में भी अगर कोई हमें गाईड न करे तो हम कदम–कदम पर रूकते हैं।

हमें पता है कि यह सड़क दिल्ली को जाती है तो हम बिना रूके बिना पूछे अपनी कार चलाते जाएंगे अगर हमें पता न हो तो हम जगह–जगह रूकेंगे, पूछेंगे अपना समय खराब करेंगे। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं :

अंतर शब्द सुरत धुन जागे, सतगुरु झगड़ नबेड़े।

जब हमारी आत्मा जाग जाती है, शब्द प्रकट हो जाता है तब सतगुरु फैसला करता है कि बेटा! इस शब्द को पकड़ उस तरफ नहीं जाना वह काल की साईड है, इस तरफ मेरी साईड है। सतसंगियों को पाँच पवित्र नाम बताए जाते हैं ये बड़े ही ऊँचे हैं। ये नाम उन पाँच धनियों के हैं जिन्हें अभ्यास के वक्त हमारी आत्मा ने पार करना है। हमारी आत्मा शब्द के ऊपर सवार होकर ही एक से दूसरे मंडल को पार करती है।

मैं बताया करता हूँ परमात्मा एक समुंद्र है शब्द उसकी लहर है आत्मा उसकी बूँद है। समुंद्र भी पानी है लहर भी पानी है और बूँद भी पानी है फर्क बिछोड़े का है। जब यह बूँद उस लहर के साथ मिल जाती है लहर उसे समुंद्र में लेकर बैठ जाती है। इसी तरह जो आत्मा गुरु को अंदर प्रकट कर लेती है गुरु के साथ बात करती है गुरु उसे समुंद्र सचखंड में ले जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आप हर तरफ से अपना ख्याल हटाकर अपने ख्याल को सिमरन में जोड़ें, अपने आप ही हमारा प्यार गुरु के साथ लग जाएगा। हमारा जितना ज्यादा प्यार होगा हम उतनी ही ज्यादा तरक्की कर सकेंगे। गुरु

हमारे प्यार का भूखा नहीं, उसे हमारे प्यार की जरूरत नहीं वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में फँसा होता है। वह साँस–साँस के साथ दिन–रात अपने गुरु के प्यार में बिता रहा होता है लेकिन प्यार किए बिना सेवक का कुछ नहीं बनता वह तरक्की नहीं कर सकता।

हमने लगातार सिमरन करना है। सिमरन करते हुए हमें दुनिया के ख्याल न आएं हम हों या हमारा गुरु हो। इतना सिमरन करें कि हमारा ख्याल यहाँ टिका रहे क्योंकि यह हमारे सफर की शुरूआत है हमारे घर का दरवाजा है। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करें, तीसरा तिल हमारी दोनों आंखों के दरम्यान थोड़ा ऊपर है। फर्क थोड़ा है यहाँ से उठकर हमें दिमाग के अंदर दाखिल होना है। वह परिपूर्ण परमात्मा जिसने हमारी रक्षा करनी है हमें जिसकी खोज है वह बाहर नहीं हमारे दिमाग में बैठकर हमारी इंतजार कर रहा है।

महात्मा हमें प्यार से कहते है कि हमें लगातार सिमरन करना चाहिए। सिमरन के वक्त अपने ख्याल को बाहर न भटकने दें, तीसरे तिल पर एकाग्र करें। मन को शान्त करने का भाव इतना ही होता है कि दुनिया के ख्याल अंदर न उठाएं। हमने जो भी काम करना है वह अपने घरों में जाकर ही कर सकेंगे। यहाँ हम अपने घरों के कारोबार त्यागकर आएं हैं यहाँ उन्हें याद करने का कोई फायदा नहीं। हम जिस काम के लिए यहाँ आए हैं उसी को अपने ख्याल में रखें। सिमरन करें ताकि हम इस वक्त से पूरा फायदा उठा सकें। हाँ भई! सिमरन करें।

26 अगस्त 1985

***

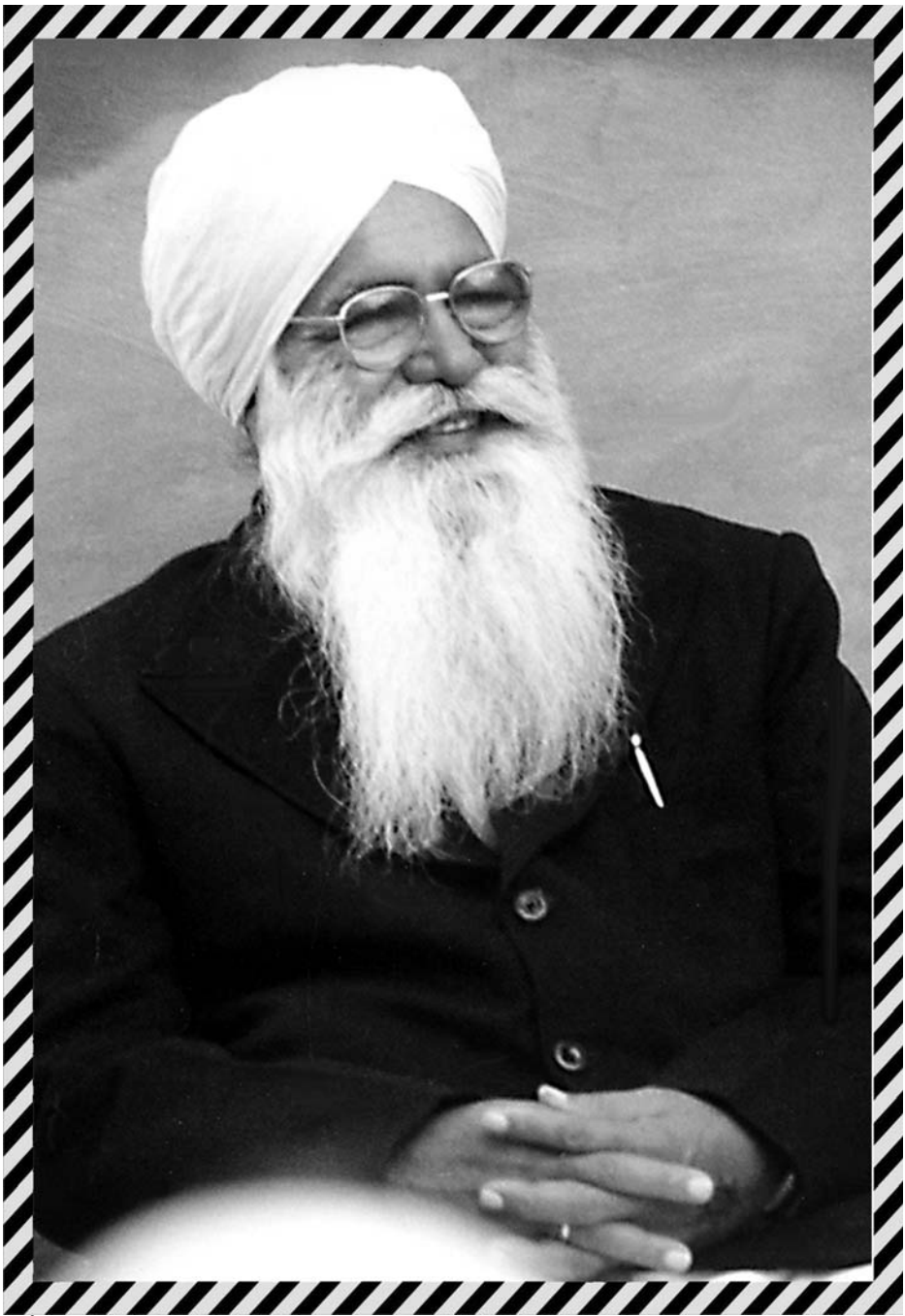

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

माफी

एक प्रेमी *: गुरु के पास माफी है लेकिन सन्त कहते हैं कि कुछ ऐसे भी पाप हैं जिनके लिए माफी नहीं दी जा सकती जैसे आत्महत्या करने वाले जीव को माफ नहीं किया जाता?*

बाबा जी : हमें यह जीवन परमपिता परमात्मा ने दिया है। हमें यह शरीर पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से मिला है अगर इस जन्म में हम गूँगे, बहरे या अंधे हैं चाहे हमारी बुद्धि अच्छी है या बुरी है चाहे हमारे शरीर में कोई कमी है या हमारा शरीर अच्छा और सुंदर है यह सब हमारे अपने ही कर्म हैं।

संसार में हमें अपने कर्मों के मुताबिक ही सब कुछ मिलता है। परमात्मा ने जन्म-मृत्यु का फैसला अपने हाथ में रखा है। वही यह फैसला करता है कि आत्मा को कितनी देर दुनियां में रहना है। जब हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं तो हम परमपिता परमात्मा की इच्छा को स्वीकार नहीं करते। सभी वेद-शास्त्र और धार्मिक ग्रन्थों का यह मत है कि आत्महत्या करने वाले को माफी नहीं दी जा सकती, आत्महत्या करने वाला बहुत बड़ा पापी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पाप भी कई तरीके के होते हैं लेकिन आत्महत्या करना सबसे बड़ा पाप है। आत्महत्या करने वाले को परमात्मा माफ नहीं करता। आत्महत्या करने वाले को उल्टा लटका दिया जाता है उसे वहाँ बहुत सी सजाएं दी जाती हैं।''

आप जानते हैं कि इस दुनियां में भी अगर कोई अपना जीवन खत्म करना चाहता है तो उसे बहुत सख्त सजा भुगतनी पड़ती है

जेल जाना पड़ता है। जब इस दुनियां का कानून आत्महत्या की कोशिश करने वाले को माफ नहीं करता तो परमात्मा का कानून भी नहीं बदलता। आत्मा की कमजोरी के कारण ही हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं, आत्महत्या करने से किसी मुसीबत का अंत नहीं होता। बहुत से लोग दुनियावी जिम्मेवारियों से घबराकर आत्महत्या करते हैं क्योंकि उनका मन कमजोर होता है और बहुत से लोग पागलपन के कारण आत्महत्या करते हैं।

***एक प्रेमी** : क्या आपने बाबा सोमनाथ या मस्ताना जी के साथ कुछ समय बिताया है? अगर आपने इनके साथ समय बिताया है तो क्या आप हमें इस बारे में कुछ बताना चाहेंगे?*

***बाबा जी** :* बाबा सोमनाथ के साथ मेरी एक बहुत छोटी सी मुलाकात हुई है। आप बाबा बिशनदास जी के बारे में जानते हैं कि आप मेरे पहले गुरु थे आपने मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे कहा, ''इसके आगे कुछ और भी है अगर तुम्हें कोई ऐसा गुरु मिले जो इससे ऊपर दे सकता हो तो मुझे भी ऐसे गुरु के पास ले चलना अगर मुझे कोई ऐसा मिलेगा तो मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊंगा।''

मुझे महाराज कृपाल के मिलने से पहले महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों का मौका मिला। जब मैं महाराज सावन सिंह जी से मिला तो मुझे तसल्ली हो गई तब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन के पास लेकर गया। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन को मेरे बारे में बताया कि परमात्मा की खोज में मैंने किस तरह धूनियां तपाई और कई किस्म के अभ्यास किए हैं।

उस समय महाराज सावन ने कहा, ''यहाँ मेरा एक शिष्य है जिसने परमात्मा की खोज में इस तरह के बहुत से अभ्यास किए

हैं, वह जब यहाँ आया था तब उसके लम्बे बाल थे, यहाँ ब्यास में आकर उसने बाल कटवा दिए।'' तब बाबा सोमनाथ को बुलवाया गया उस समय हम महाराज सावन सिंह जी के सामने मिले थे।

मुझे कई बार महाराज सावन सिंह जी के सतसंग के दौरान मस्ताना जी के साथ समय बिताने का मौका मिला है। आप मेरे बहुत अच्छे दोस्त थे, हमारा एक-दूसरे के प्रति बहुत प्यार था।

मस्ताना जी एक सच्चे प्रेमी थे। आप महाराज सावन सिंह जी को शाह कहते थे और साँस-साँस के साथ अपने गुरु सावन को याद करते थे। आप मस्ताना जी के लिखे हुए जो भजन गाते हैं वह मेरे ही लिखे हुए हैं। मस्ताना जी के चोला छोड़ने के बाद किसी और आदमी ने उन भजनों के अंत में अपना नाम लिखना शुरू कर दिया था कि ये भजन उसके लिखे हुए हैं जोकि मुझे अच्छा नहीं लगा इसलिए हमने मस्ताना जी का नाम लिखा है।

मस्ताना जी अपने पैरों में घुंघरूओं की पाजेब पहनकर महाराज सावन सिंह जी के सामने नाचते थे। उन दिनों मुझे भी नाचने का शौंक था मैंने उसी भाव से यह भजन लिखा थाः

नाच रे मन नाच तू सतगुरु आगे नाच रे,
धन सतगुरु का बोलिए तेरा कटे जन्म का पाप रे।

मैंने महाराज सावन सिंह जी के सामने खड़े होकर कहा, ''जिस तरह रांझा कहा करता था कि वे लोग मेरे साथ आ जाएं जो फकीर बनना चाहते हैं न मेरी शादी हुई है न मेरी शादी होगी और दुनियां में कोई ऐसा नहीं जो मेरे मरने पर रोएगा।''

जिस तरह महाराज कृपाल सिंह जी ने मुझे जमीन के नीचे गुफा में भजन-अभ्यास के लिए बिठाया था उसी तरह महाराज

सावन सिंह जी ने मस्ताना जी के लिए गुफा बनाकर उनसे भजन-अभ्यास करवाया। मुझे भी उस गुफा में भजन-अभ्यास करने का मौका मिला है।

प्यारेयो! जब मस्ताना जी ने 'नामदान' देना शुरू किया उस समय उनकी बहुत संगत थी लेकिन उनका मेरे साथ वैसा ही प्यार था जैसा महाराज सावन सिंह जी के दरबार में हुआ करता था। मैं जब भी मस्ताना जी से मिलने जाता तब वह सारी संगत के सामने मुझसे बुलवाते कि बताओ! महाराज सावन सिंह जी कैसे थे? तब मैं सारी संगत के सामने महाराज सावन सिंह जी की सुंदरता और यश के बारे में बताता जैसा मैंने उन्हें देखा था।

महाराज सावन सिंह जी बहुत खूबसूरत थे। आप एक सभ्य गुरु थे। आपकी घड़ी में सोने की चेन लगी हुई थी। आप साफ-सुथरे कपड़े पहनते थे कभी किसी ने आपके कपड़ो पर कोई दाग लगा हुआ नहीं देखा था। आप जब हँसते तो ऐसा लगता था कि सब हँस रहे हैं। आप इतने सुंदर थे कि परियां भी आपकी पूजा करती थी। आपके बात करने का तरीका ऐसा था कि आप बात किसी से करते और दूसरा सुनने वाला अपने पापों को समझकर काँपता था।

मस्ताना जी कहा करते थे, ''आप यहाँ जो कुछ देख रहे हैं यह सब महाराज सावन की दया है।'' मस्ताना जी लोगों को पैसे बाँटा करते थे जिस दिन वह ऐसा करते सुबह से लेकर रात तक पैसे बाँटते रहते। कई बार सरकार ने यह जानने की कोशिश की कि पैसे कहाँ से आते हैं? एक बार सरकार ने आपको जेल में भी डाला लेकिन यह मालूम नहीं हो सका कि बाँटने के लिए पैसे कहाँ से आते हैं? आप यही कहते थे कि यह सब महाराज सावन की दया है।

आपने एक जगह यह भी लिखा है कि अगर किसी ने मस्ताना को एक रूपया दिया है तो वह उसके बदले में हजार रूपये ले सकता है। आप हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनते थे। मैंने देखा है कि आप जूते भी फटे हुए पहनते थे। आप फटे हुए कपड़े और जूते दिखाकर कहते, ''यह महाराज सावन सिंह जी का खेल है कि गरीब मस्ताना के पास फटे हुए कपड़े और इन जूतों के सिवाय कुछ नहीं।''

एक दिन मस्ताना जी ने बहुत प्यार से मुझसे कहा, ''मुझ पर महाराज सावन सिंह जी की दया है लेकिन जो ताकत तेरे पास आएगी उसने बहुत भजन-अभ्यास किया है। सावन सिंह जी परम पिता परमात्मा हैं और वह परमात्मा का बेटा है। उसने इतना भजन-अभ्यास किया है अगर वह अपने दोनों हाथ खड़े कर दे तो आग उगलती हुई तोपें भी रूक जाएंगी। वक्त आने पर वह ताकत तुम्हारे घर आएगी तुमने उसका आदर करना है।''

आमतौर पर मस्ताना जी महाराज सावन के नामलेवाओं से खुश नहीं होते थे। आप कहते थे कि सावन के रूप में आपको परमात्मा मिला है लेकिन आप उसकी कद्र नहीं करते। सावन शाह का रूप आपके अंदर इतना गहरा समाया हुआ था कि आप उसे भूल नहीं सकते थे। जैसा कि मैंने अपने एक भजन में लिखा हैः

जद दा सावन नजरी आया, पलकां विच लुकाया,
अजे तक ना भुल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया,
सावन प्यारा सावन सोहणा, सावन दिलबर जानी,
हँसदा हँसदा दे गया मैंनू, कृपाल अमर निशानी।

मैंने कभी अपने प्यारे गुरु कृपाल और महाराज सावन में कोई फर्क महसूस नहीं किया।

***

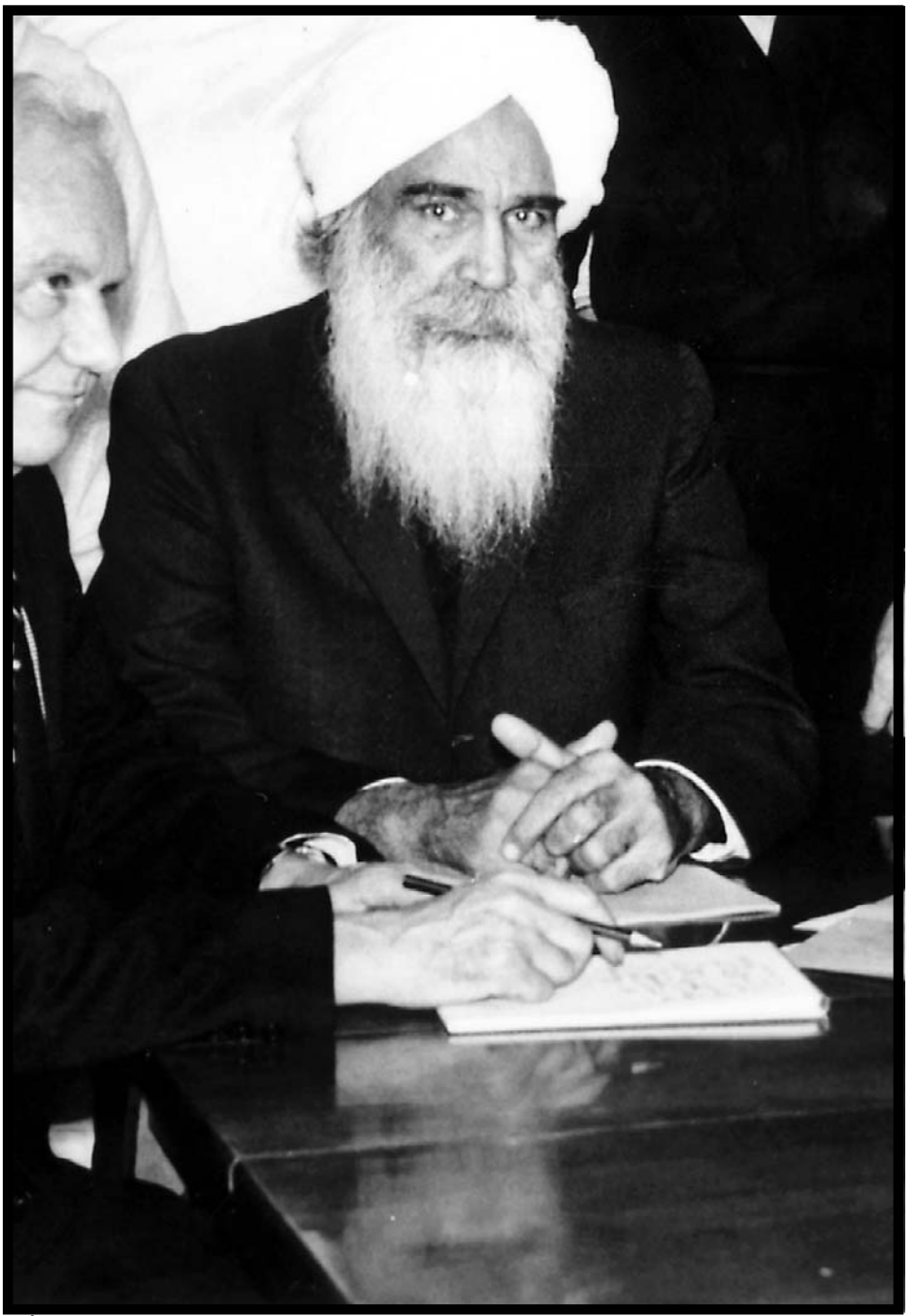

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

मन की आदत बदलें

पिछले साल मैंने प्रेमियों की भेजी हुई डायरियों को देखा कि प्रेमियों ने थोड़ी बहुत अंदरूनी तरक्की होने या अंदरूनी तरक्की न होने के बारे में लिखा है। कुछ प्रेमियों ने तो यहाँ तक भी लिखा है कि पवित्र नामदान मिलने के बाद उनकी अंदरूनी तरक्की बिल्कुल नहीं हुई। उन्हें समझ ही नहीं आया कि अंदरूनी तरक्की क्यों नहीं हुई? मैं आपको विस्तार से बताना चाहता हूँ कि क्या करने से अंदरूनी तरक्की होती है।

अगर प्रेमियों ने अपना आध्यात्मिक भजन-अभ्यास सही ढ़ंग से जारी रखा होता और आत्मनिरिक्षण करके अपने दोष त्यागने पर जोर दिया होता तो वे अपनी शारीरिक चेतना से निकलकर ऊपर के मंडलों में पहुँच जाते जहाँ शब्द गुरु अपने बच्चों का स्वागत करने के लिए सूक्ष्म देश के द्वार पर प्रतिक्षा कर रहे हैं। वे वहाँ उतने ही यकीन से पहुँच गए होते जितने यकीन से हम कह देते हैं कि दो और दो मिलाने से चार बनते हैं लेकिन वे थोड़ी देर के लिए भी सही ढ़ंग से भजन-अभ्यास नहीं कर पाए इसलिए उन्होंने गलती से यह समझ लिया कि भजन-अभ्यास करने से कुछ हासिल नहीं होगा।

बाईबल में सन्त पॉल ने कहा है, ''मैं रोज मरता हूँ।'' अगर आपने सतगुरु की बताई हुई हिदायतों पर सही तरीके से अमल किया होता तो आप इस बात से सहमत होते।

सतगुरु की हिदायतों का पालन करने से आपको आपका मन रोकता है। आप अभी तक मन को बाहरी दुनिया के मोह बंधन से मोड़कर अंदर के परम आनन्द से नहीं जोड़ सके अगर आप सतगुरु

की बताई हुई हिदायतों को आसान तरीके से समझें तो उन्हें करना इतना मुश्किल नहीं होता। सतगुरु कहते हैं:

1. आप भजन-अभ्यास के लिए तनावमुक्त आसन में बैठें जिससे आप बिना हिले-डुले ज्यादा से ज्यादा समय बैठ सकें।

2. आप आसन में बैठते वक्त पूरी जागृत अवस्था हों और आपका ध्यान आत्मा की सीट तीसरे तिल पर केन्द्रित हो, यह स्थान आपकी भृकुटियों के बीच थोड़ा सा पीछे हैं।

3. आपके सामने जो अंधेरा है उसके बीचों बीच देखते हुए प्यार से और शान्त मन से पाँच पवित्र नाम का सिमरन धीरे-धीरे और विराम लेकर दोहराएं।

जो प्रेमी सतगुरु की हिदायतों के अनुसार आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करते हुए भजन-अभ्यास करते हैं उन्हें कामयाबी मिलती है। जो प्रेमी सचेत होकर अपने मन और बाहरी विषयों पर लगाम नहीं लगाते वे कामयाब नहीं होते इसलिए प्रेमियों को इस बात पर जोर देकर बताया जाता है कि अपनी अनुचित और आवांछनीय आदतों और अवगुणों को निकालकर उनकी जगह सदगुणों और अच्छी आदतों को अपनाना चाहिए।

ऐसा करने के लिए आत्मनिरिक्षण की डायरी को रोजाना लिखना अनिवार्य है। आप अपने आपको जितना सुधारेंगे उतना ज्यादा आपका मन और इन्द्रियां आपके काबू में आ जाएंगे। इस विषय पर पहले भी बहुत कुछ विस्तार से कहा जा चुका है और आध्यात्मिक प्रगति के लिए बाकी जरूरी तत्वों के बारे में भी मेरे पिछले संदेश में छप चुका है। इस संदेश में समझाए हुए मुद्दे और सुबह भजन-अभ्यास में बिठाने से पहले दिए गए मेरे सारे संदेश प्रेमियों के लिए एक मार्गदर्शक सीमा की तरह है। जिससे प्रेमी

अपने अंतरी और बाहरी आध्यात्मिक अनुशासन पर अमल करने में कितना कामयाब हो पाए हैं, आप यह माप सकते हैं।

जब मैं कहता हूँ कि प्रेमियों ने भजन-अभ्यास सही ढ़ंग से नहीं किया तो इसका मतलब यह है कि प्रेमी दुनिया के सकंल्पों-विकल्पों को हटाकर तीसरे तिल पर एकाग्रचित नहीं हुए हैं।

आप अपने शरीर के अंदर रहते हैं लेकिन आप अपने शरीर के मालिक नहीं हैं क्योंकि आपके नौकर मन ने और पाँच डाकुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने आपकी आत्मा का सिंहासन छीन लिया है। जब तक आप इन नौकरों को वहाँ से हटाकर नौकरों वाली जगह नहीं बिठाते तब तक ये आपका ध्यान बाकी चीजों से निकालकर अंदर नहीं जाने देंगे।

सतगुरु एक प्यारे पिता की तरह आतुरता से उस दिन का इंतजार करते हैं जब हम अपने आपको सुधारते हैं। सतगुरु हमें शरीर रूपी कैदखाने से निकालने के लिए सिर्फ एक मौके की तलाश में रहते हैं। सतगुरु एक कुशल मछली पकड़ने वाले की तरह जैसे ही देखते हैं कि शिष्य की आत्मा रूपी मछली काँटें में फँस गई है, तब वे सुरक्षित रूप से उसे अपनी टोकरी में रख लेते हैं।

इंसान इस तरह का बना होता है कि यह एक जगह ज्यादा देर नहीं टिक पाता। यह तरक्की करता है, नहीं तो अवनति करता है। आपका मन और इन्द्रियां आपके कितने काबू में आए हैं, आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं कि आप तरक्की कर रहे हैं या आपकी अधोगति हो रही है?

आध्यात्मिक तरक्की सिर्फ नैतिकता से जीवन जीकर प्राप्त नहीं होती। हर बार भजन-अभ्यास में बैठने से अंदर से जो मदद

और ताकत मिलती है उससे आध्यात्मिक तरक्की होती है। अगर अंदर की तरक्की नजर नहीं आती तो यह समझें कि जमीन में पानी डाला जा रहा है। आप हर बार अभ्यास में बैठ रहे हैं यह आपकी आदत बन रही है। आज मन को बाहर की चीजों का रस लेने की आदत बनी हुई है अभ्यास करने से यह आदत बदल जाएगी, एक दिन आपका मन मान लेगा कि यह आपके फायदे के लिए है।

आदत स्वभाव में बदलती है। फिलहाल प्रेमियों को रोजाना अभ्यास में बैठने में इसी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि मन को बाहर की दुनिया के विषय-विकारों का स्वाद लेने की आदत उसका स्वभाव बन चुका है। इसलिए मन एकांत में बैठना पसंद नहीं करता। आप भजन-अभ्यास की आदत डालकर अपने मन को बाहरी दुनिया के विषयों का स्वाद लेने की आदत बदलकर अंदर के रसों की मधुरता और आनन्द लेने की आदत डालें।

हुजूर स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अधीर मन हमेशा बाहर दौड़ता है क्या आप इसे एक जगह टिका सकते हैं? ये सिर्फ परमात्मा के शब्द-नाम की जी जान से भक्ति करके ही हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग न कभी मिला है न कभी मिलेगा।''

मैं चाहता हूँ कि आप अपने गुरु के ऊपर पूरे विश्वास और भरोसे के साथ इस मार्ग पर चलें और परमात्मा का धन्यवाद करें कि उसने आपको इस मुश्किल युग में भी नाम की दात बख्शी है।

दृढ़ रहें, दृढ़ रहें, दृढ़ रहें। गुरु पावर आपके सिर पर खड़ी है। गुरु के प्रति पूरी श्रद्धा और दृढ़ता से आप एक दिन अपनी सभी रुकावटों से उभरकर अपने रूहानी मकसद में कामयाब हो जाएंगे।

***

20 फरवरी 1971

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

जुल्म साथ है खाली हाथ है

साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु।।
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु।।

हम दुनिया में जो सामान प्रेम-प्यार से इकट्ठा करते हैं और हम जिस शरीर में बैठे हैं ये साथ नहीं जाएंगे। इतिहास बताता है कि जो मुल्क कभी गुलाम थे, गरीब थे वे आज आजाद हैं। कोई वक्त था जब हिन्दुस्तान सोने की चिड़िया कहलाता था। काबुल से महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान को लूटने के लिए अठारह बार हमले किए। वह यहाँ से बहुत सोना-चाँदी लूटकर ले गया।

जब महमूद गजनवी का आखिरी समय आया तब उसने अपने अहलकारों से कहा, ''मैंने जो गनीमत का माल लूटा है उसे बाहर सजा दो।'' मीलो-मील तक सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात और धन-दौलत सजा दिए गए। जब उसने पालकी में बैठकर सारा माल देखा तो दहाड़े मारकर रोया और कहने लगा, ''ओह! मैंने इस माल के लिए लाखों औरतें विधवा कर दी, लाखों ही बच्चे यतीम कर दिए। अफसोस! इसमें से एक पाई भी मेरे साथ नहीं जाएगी।''

महमूद गजनवी ने हुक्म दिया कि जब मेरा जनाजा उठाएं उस समय मेरे हाथ कफन से बाहर नीचे की तरफ हों ताकि दुनिया जान जाए कि जब महमूद गजनवी ने इस संसार से कूच किया तो उसके दोनों हाथ खाली थे। मेरे साथ जो बीतेगी वह तो मुझे भुगतनी ही है। मेरे पीछे यह नारा लगानाः

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

***

धन्य अजायब

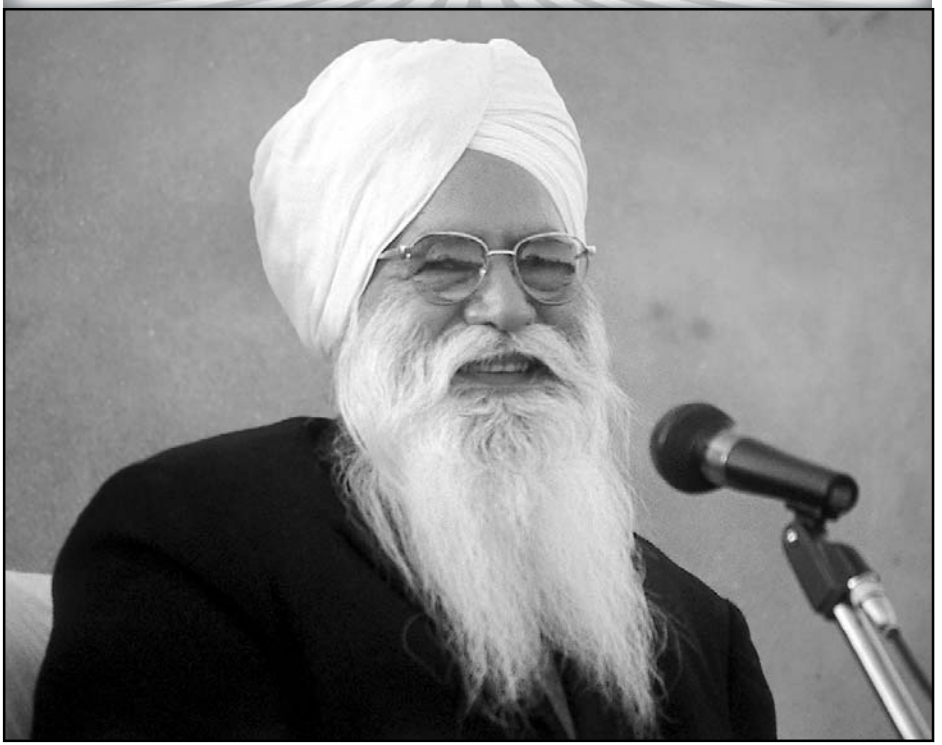

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

31 मार्च, 01 व 02 अप्रैल 2018

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम:

18, 19 व 20 मई 2018